eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीरदास का जीवन दर्शन

[1]श्री लाड़लेमशाक पी0 नदाफ
[1]शोधार्थी, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई, धारवाड़ केंद्र

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

कबीर अपने समय के क्रांतिकारी युगद्रष्टा थे। वे प्रधानतः एक भक्त थे, लेकिन भक्ति के अधिकार को वे सामान्य जन तक ले गए। उन्होंने ब्रह्म के निर्गुण स्वरूप को अपनाते हुए उसकी साधना में बाह्याचार और कर्मकांड की सर्वथा उपेक्षा की। वे जिस साधना पद्धति को विकसित कर रहे थे वह आम लोगों के जीवन और पहुँच के अनुकूल थी। कबीर अपने समय के क्रांतिकारी युगद्रष्टा थे। यद्यपि इन्होनें कोई दार्शनिक मत प्रस्तुत नहीं किया। तथापि ईश्वरीय शक्ति में प्रेम की भाव–व्यंजना करते हुए उन्होंने ब्रह्म, जीवन जगत तथा माया आदि के बारे में जो विचार व्यक्त किये इन्हीं के आधार पर उनके दार्शनिक विचारों का मूल्यांकन किया जा सकता है। वे प्रधानतः एक भक्त थे, लेकिन भक्ति के अधिकार को वे सामान्य जन तक ले गए। उन्होंने ब्रह्म के निर्गुण स्वरूप को अपनाते हुए उसकी साधना में बाह्याचार और कर्मकांड की सर्वथा उपेक्षा की।

बीज शब्द – कबीरदास, ब्रह्म, निर्गुण स्वरूप, जीवन दर्शन, साधना में बाह्याचार।

Introduction

कबीर निराकारवादी हैं। उन्होंने अपनी भक्ति निर्गुण निराकार परमपिता परमेश्वर के चरणों में अर्पित की है। "संत कबीरदास जी ने जिस परमतत्व (ईश्वर) को निर्गुणराम कहा है वह अज्ञेय है। उसकी गति लक्षित नहीं की जा सकती। चारों वेद, स्मृतियां, पुराण, व्याकरण आदि कोई भी उसका मर्म नहीं जानते"।[1] निराकार की प्राप्ति ज्ञान द्वारा सम्भव है और यह ज्ञान गुरू द्वारा प्रदान किया जाता है। कबीर के अनुसार कस्तूरी मृग में बसे कस्तूरी की सुगन्ध की तरह ईवर घट–घट वासी है, उसे बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु अज्ञानवश मनुष्य मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, काशी, काबा आदि में ढूँढता फिरता है। कबीर बार–बार गोविन्द, कहते हैं कि उसे अपने भीतर खोजिए क्योंकि उनका मानना है– हिरदै सरोवर है। अनिवासी ईश्वर के लिए कबीर ने राम शब्द का प्रयोग किया है किन्तु उनका राम सगुण अर्थात् दशरथ पुत्र राम न होकर परब्रह्म का प्रतीक है। कबीर ने राम, केशव, मोहन, हरि इत्यादि शब्दों को व्यापक ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त किया है। कबीर जीवन में भगवान को पुकारने की आवश्यकता निश्चित रूप से अनुभव करते हैं इसीलिए उन्हें कोई नाम देना आवश्यक है।

कबीर का विश्वास है कि–

भगति भजन हरि नाम है, आ दुःख अपार।
मनसा वाचा कर्मणा, कबीर सुमिरन सार।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर के अनुसार आत्मा और राम अर्थात ब्रह्मा या परमात्मा एक ही है। जीव परमात्मा का ही अंश है, आध्यात्मिक रूप में कबीर एकेश्वरवादी हैं किन्तु उनका एकेश्वरवाद मुस्लिम एकेश्वरवाद से भिन्न है। इस्लाम धर्म के अनुसार ईश्वर समस्त स्थानों और प्राणियों से भिन्न और परम शक्तिवान है किन्तु कबीर द्वारा प्रतिपादित ईश्वर व्यापक है, वह समस्त प्राणियों में रमण करता है। वह अलख, अगोचर और निर्गुण है। उसे पुस्तकीय ज्ञान मात्र से नहीं जाना जा सकता बल्कि वह प्रेमपूर्ण भक्ति से प्राप्य है।

कबीर सहज भक्ति की बात भी करते हैं। कबीर के अनुसार श्सहजश वह अवस्था है जिसमें मनुष्य सरलता से विषयों का त्याग कर सके। यह धीरे–धीरे अभ्यास से प्राप्त होने वाली अवस्था है। धीरे–धीरे सहज भाव से विषय वासना, सांसारिकता, माया–मोह, अहंकार आदि समाप्त हो जाती है और भक्त भगवान से एकाकार हो जाता है। यही भक्ति का परम स्वरूप है, यही भक्त के जीवन का एकमात्र उद्देश्य भी। कबीर की भक्ति में ज्ञान, योग और प्रेम का अद्भुत समायोजन हुआ है।

जीवन आधारित दर्शन–

यद्यपि कबीर ने जगत की निस्सारता को बहुत जोर देकर स्थापित किया है तथा तमाम जागतिक संबंधों को एक तरह का भ्रम कहा है, इसके बावजूद अगर उनके दर्शन का निरीक्षण सूक्ष्मता से करें तो वहाँ एक जीवन आधारित दृष्टिकोण मिलता है। इस संदर्भ में हमें कबीर के देश–काल की सीमा को ध्यान में रखकर ही विचार करना चाहिए। कबीर का समय मध्यकालीन युग था, जिसमें आधुनिक दृष्टिकोण अथवा भौतिकवादी जीवन–दृष्टि का विकास नहीं हुआ था। कर्मफलवाद, ईश्वरोन्मुखता उस युग की जीवन–दृष्टि का केंद्रीय तत्व था। कबीर का संघर्ष मुख्य रूप से साधना के अधिकार का संघर्ष था, जिसे कुछ खास लोगों के लिए संरक्षित कर दिया गया था। जाति, शिक्षा आदि की बाधाएँ थीं।

कबीर ने इस जकड़न को तोड़ दिया। मनुष्य ने जैसा जीवन पाया है उसी के अंदर परमतत्व का साक्षात्कार संभव है कबीर ने अपने देश–काल में इस भाव भूमि का निर्माण किया। कबीर के दर्शन को जीवन आधारित इसी अर्थ में समझा जाना चाहिए। कबीर से पहले शिक्षा पाने, ज्ञान अर्जित करने का अधिकार समाज में कुलीनों और उच्च जातियों तक सीमित था। हिंदुओं में ब्राह्मण तथा मुसलमानों में मुल्ला–काजी ज्ञान के अधिकारी और व्याख्याता बने हुए थे। कबीर ने इस वर्चस्व को तोड़ते हुए अपनी तथाकथित निम्न जाति के बावजूद अपने को ज्ञान का अधिकारी घोषित किया

"तू ब्राह्मण मैं कासी का जुलाहा, चीन्हिं न मोर गियाना।

तै सब माँग भूपति राजा, मोरे राम धियाना"।।2

कबीर के समय में ज्ञान का माध्यम वेद, पुराण, कुरान आदि ग्रंथ थे। कबीर ने पुस्तकीय ज्ञान की अनिवार्यता को अस्वीकार किया। उनके अनुसार प्रभु को प्रेम के द्वारा पाया जा सकता है न कि वेद–पुराण पढ़कररू

"चारिउ वेद पढ़ाइ करि, हरि सूँ न लाया हेत।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

बालि कबीरा ले गया, पंडित ढूँढै खेत"।।

कबीर ने ज्ञान प्राप्ति के लिए पुस्तक की बजाए गुरु को ज्यादा महत्व दिया। कबीर ने जिस जीवन–दर्शन को विकसित किया उसमें परम ब्रह्म के साक्षात्कार के लिए ज्ञान चक्षु को खोलने वाला गुरु ही है

"सतगुर की महिमा अनॅत, अनंत किया उपकार।

लोचन अनंत, उघाड़िया, अनंत दिखाबनहार"।।3

कबीर जन्म के आधार पर ऊँच–नीच के सामाजिक पद–क्रम को स्वीकार नहीं करते। न ही उसे महिमामंडन के योग्य मानते हैं। उनका कहना है कि कोई ऊँचे कुल में जन्म लेकर नीचा कर्म करता है तो वह उसी प्रकार निंदा के योग्य होगा जैसे स्वर्ण कलश में मदिरा भरा हो तो साधु उसकी निंदा ही करेंगे

"ऊँचे कुल क्या जनमियाँ, जो करणी ऊँच न होइ।

सोवन कलस सुरे भर्या, साधु निंद्या सोइ"।

कबीर के समय में सभी धर्मों में कर्मकांड की प्रधानता थी। हिंदू और मुसलमान के अपने कर्मकांड तो थे ही, ब्राह्मण धर्म की आलोचना करने वाले सिद्धों में भी पंचमकार युक्त एक भोगपरक साधना पद्धति विकसित हुई। उसके उलट नाथों में कठिन योग पद्धति का विकास हुआ। लेकिन यह पद्धति प्रेम–भक्ति से रहित थी। कबीर ने साधना की ऐसी पद्धति विकसित की जिसमें भक्ति, प्रेम और योग का समन्वय था। कर्मकांड की कोई आवश्यकता नहीं थी। जगत की निस्सारता पर जो जोर दिया गया था उसका अभिप्राय ही यह था कि व्यक्ति विषय–वासना में ही उलझा नहीं रह जाए। कबीर ने आचरण की शुद्धता पर बल दिया। ईश्वर प्राप्ति के लिए उन्होंने सच्चे हृदय की वकालत की । अगर व्यक्ति हृदय का सच्चा नहीं हैं तो हज करने और काबा जाने से कोई लाभ नहीं है।

"सेष सबूरी बाहिरा, क्या हज काबै जाइ।।

जिनकी दिल स्याबति नहीं, तिनकौ कहाँ खुदाइ"।।4

कबीर ईश्वर प्राप्ति के लिए गृह–त्याग अथवा सन्यास लेना भी आवश्यक नहीं मानते हैं। उन्होंने प्रेम, योग और भक्ति के समन्वय वाले जिस मार्ग की वकालत की उसका अनुसरण घर में रहते हुए भी संभव है रू

"अवधू भूले को धर लावै।सो जन हमको भावै।।

घर में जोग भोग घर ही में, घर तज बन नहिं जावै।

घर में जुक्तु मुक्त घर ही में, जो गुरु अलख लखावै"।।5

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

इस प्रकार कबीर अपने दर्शन को जीवन से जोड़ते हैं। अंतिम उद्देश्य उनके यहाँ परमतत्व की प्राप्ति अथवा ब्रह्म का साक्षात्कार ही है, पर इसे उन्होंने सामान्य जीवन के साथ ही संभव किया। यह विचारधारा आम जनता के करीब थी और उन्हें इस बात से संबल मिला कि ईश्वर प्राप्ति के लिये वैराग्य या संन्यास धारण करना आवश्यक नहीं है, दिनानुदिन का कार्य करते हुए भी परम तत्व की प्राप्ति की जा सकती है। वे जिस साधना पद्धति को विकसित कर रहे थे, वह आम लोगों के जीवन और पहुँच के अनुकूल थी। अपनी साधना पद्धति के विकास के क्रम में कबीर ने अपने समय के सभी धार्मिक संप्रदायों–हिंदु, मुसलमान, सिद्ध नाथ, वैष्णव, शक्ति आदि की मान्यताओं का परीक्षण किया तथा संकीर्णताओं और रूढ़ियों पर प्रहार किया। इसी क्रम में उन्होंने जो विचार व्यक्त किए हैं उसी से उनकी दार्शनिक मान्यताएँ उभरकर सामने आई। कबीर के दार्शनिक दृष्टिकोण का आधार उनके काव्य के मुख्य विषय मन, आत्मा, माया मुक्ति जगत इत्यादि में दृष्टिगत होता है।

जिसका विवेचन निम्नलिखित है–

1. ब्रह्म संबंधी दृष्टिकोण –

कबीर उच्च कोटि के महात्मा एवं भक्त थे। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था, पर ब्रह्म का अन्वेषण करके उससे साक्षात्कार करना यद्यपि कबीरदास को विभिन्न धर्मग्रथों का ज्ञान था लेकिन ब्रह्म के विषय में उन्होने जो विचार व्यक्त किए हैं वे उनकी स्वानुभूति का परिणाम है। कबीर का ब्रह्म संबंधी ज्ञान उपनिषदों के अद्वैतवाद से प्रभावित है।

कबीर का विचार था कि बह्म के मूल तत्व को समझना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कबीर जी घोषणा करते है कि उस परमतत्त्व को न कोई देख सकता है, न प्राप्त कर सकता है, वह न खाता है, न पीता है, न जीता है, न मरता है। उसका कोई रूप रंग अथवा वेशभूशा नहीं है। वह असीम अनन्त, अनिर्वचनीय, अरूप तथा सर्वव्यापी है। एक स्थल पर वे कहते हैं–

"पानी ही ते हिम भया, हिम है गया बिलाय।

कबीर जो था सो भया, अब कुछ कहा ना जाय"।।

कबीर का ब्रह्म अपार महिमाशाली है। उसकी शक्ति, प्रकाश तथा रूप स्वरूप तक कोई नहीं पहुँच सकता। प्रेमी – प्रमिका का रूपक प्रस्तुत करते हुए वे कहते हैं–

श्बालम आउ हमारे गेह रे।

तुम बिन दुखिया देह रे।

सब कोई कहैं तुम्हारी नारी, मोको यह संदेहरे ।

एकमेक हयै सेज न सौवे तब लागि कैसा स्नेह रे।

अन्न न भावै नींद न आवै, जिह बन धरै न धीररे।

ज्यों कामीं कौ कामिनी प्यासी, ज्यों प्यासे कौ नीर रे।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

इस प्रकार कबीरदास ने निर्गुण निराकर और निर्विकार ब्रह्म की भक्ति पर ही बल दिया हैं परन्तु कहीं–कहीं वे सगुण भावनाओं का भी आश्रय ले लेते है।

2. माया संबंधी दृष्टिकोण

अद्वैत वेदांत की एक अद्भुत माया है। यह सत् है न असत। सत् इसलिए नहीं है कि ब्रह्म का ज्ञान होने पर इसका ज्ञान बाधित हो जाता है किंतु यह असत् भी नहीं है क्योंकि असत् वस्तु की प्रतीती नहीं होती जबकि माया की प्रतीति होती है। शंकराचार्य के अनुसार "माया भगवान की अव्यक्त शक्ति है, जिसके आदि का पता नहीं चलता। यह गुण त्रय (सत, रज, तम) से युक्त अविधा रूपिणी है" ।6 कबीरदास ने अद्वैत वादियों से प्रभावित होकर माया को मिथ्या माना है। उन्होंने कहा की माया संसार में अज्ञान का अंधकार फैलाती है। इसलिए इसे उन्होनें पापिनी, विश्वास घातिनी, मोहिनी, सांपिणी, ठगिणी, डाकिनी आदि कहा है। आत्मा संसार में आकर इसी के जाल में फँसती है। सृष्टि के सारे संबंध माया–जन्य हैं, समस्त सृष्टि मायामय है –

कबीर माया पापणी फंद लै बैठी हाटि,

सब जग तो फंघे पाड़या फासियां गया कबीरा काटि।।

कनक और कामिनी माया के प्रधान प्रतीक हैं। कबीरदास जी ने माया को परिवर्तनशील माना है। वह उत्पन्न तथा नष्ट होती रहती है। इसी भ्रम का शिकार होने के कारण जीव ईश्वर से विमुख हो जाता है। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए इस माया रूपी ममता को त्यागना पड़ता है। इसी भाव को दृष्टिगत कर कबीरदास जी कहते हैंरू–

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं।

कबीरदास जी भक्तों को माया से बचने का उपाय बताते है रू–

ष्आँधा घड़ा न जल में डूबे सूधा सूभर भरिया।

जाकौ यह जग घिन करि चालै, ना प्रसादि निस्तरिया।।

3. जगत संबंधी दृष्टिकोण –

कबीर दास ने अद्वैतवादियों के समान ब्रह्म को सत्य तथा जगत् को मिथ्या माना है। वे बार– बार संसार की सत्ता को श्श्वर कहते हैं।

कबीर दास जी संसार को बाजीगर का खेल कहते हैं। उनके अनुसार यह भ्रामक है। सृष्टि के बारे में कबीर दास के विचार वेदांत तथा सांख्य दर्शनों से प्रभावित है। लेकिन एकाध स्थल पर वे सूफी तथा इस्लाम की धारा से भी प्रभावित दिखाई पड़ते है।

©IJARMS JOURNAL, 2024

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

वे संसार के मिथ्या भाव को प्रकट करने केलिए उसे सेम्बल का फूल, आकाश निलिमा, धुआँ धरोहर आदि कहते है। वे स्पष्ट घोषणा करते हैंरू –

यहूँ ऐसा संसार है, ज्यों सेम्बर का फुल,

दिन दस के व्यवहार में झूठै रंग न भूल।।

4. जीव तत्व संबंधी दृष्टिकोण –

शंकराचार्य के वेदांत दर्शन के अनुसार "शरीर तथा इंद्रिय समूह के अध्यक्ष और कर्मफल भोक्ता आत्मा को ही जीव कहते हैं" ।7 कबीरदास जी परमतत्व को ही सर्वोपरि मानते हैं। कभी–कभी लगता है कि कबीर का ब्रह्म तथा आत्मा एक ही है। कुम्भ के रूपक द्वारा उन्होंने सिद्ध किया है कि आत्मा शरीर बद्ध होने के कारण ब्रह्म से भिन्न प्रतीत होने लगती है, पर यह अलग नहीं है। कबीरदास जी आत्मा को कभी अमर मानते हैं तो कभी ब्रह्म के समान मानते हैं, क्योंकि ब्रह्म आनन्द स्वरूप है, अतः आत्मा भी आनन्द स्वरूप है। वे तो आत्मा–परमात्मा के अंश–अंशी संबंध को स्वीकार करते हैं।

निर्गुण धारा के संत कवि कबीर मुख्य रूप से एक भक्त कवि और साधक थे। उन्होंने ईद्ववर और जीव के अद्वैत को स्वीकार किया है। माया की भूमिका को स्वीकार करने के साथ ही कबीर इस जगत की निस्सारता पर भी जोर देते हैं। उनका मानना है कि जीवन क्षणभंगुर है। वे परमात्मा से संबंध को ही एकमात्र सत्य मानते हैं। योग उनके लिए चित्रशुद्धि का साधन है। योग के साथ परमात्मा की प्राप्ति के लिए ज्ञान और प्रेम आवश्यक है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरु कृपा आवश्यक है। गुरु ही साधक को सही मार्ग पर अग्रसर करता है।

उपसंहार

संत कबीरदास के दार्शनिक विचारों का अध्ययन कर हम पाते हैं कि कबीरदास के दार्शनिक विचार मात्र पलायन या बौद्धिक प्रयास नहीं है बल्कि उनकी सामाजिक चेतना से अनुप्राणित हैं। कबीर भक्त हैं, ज्ञानी हैं, साधु हैं, पति, पिता, कर्मठ (काम करनेवाला) और सब से बढ़ कर बडे दार्शनिक हैं। हर विषय में उनकी दार्शनिक विचारधारा अन्तर्लीन रहती है। ये योगी होने के कारण योग साधना के साथ–साथ राम और जगत पर प्रेम भावना रखते हैं। सब से बढ़ कर दार्शनिक लालच नहीं होता। लालच माया जनित है। इसलिए वे भगवान से कहते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कबीर का दार्शनिक दृष्टिकोण वेदों, उपनिषदों आदि से प्रभावित है, जो विशुद्ध भारतीय है। इस पर किसी विदेशी विचारधारा का प्रभाव नहीं है। वे आत्मा–परमात्मा को एक मानते हुए अंश–अंशी का संबंध स्वीकार करते हैं।

संदर्भ सूची –

1. कबीर ग्रंथावली, श्याम सुंदर (बाबू) दास, पृ. सं. 175, प्रकाशक दृ इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, 1875.

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

2. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली,पाठ्यक्रम, इकाई 6 कबीर के दार्शनिक विचार, पृ. सं. 14, प्रकाशक दृ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2019.

3. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली, पाठ्यक्रम, इकाई 6 कबीर के दार्शनिक विचार, पृ. सं. 14, प्रकाशक दृ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2019.

4. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली, पाठ्यक्रम, इकाई 6 कबीर के दार्शनिक विचार, पृ. सं. 14, प्रकाशक दृ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2019.

5. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली, पाठ्यक्रम, इकाई 6 कबीर के दार्शनिक विचार, पृ. सं. 15, प्रकाशक दृ इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2019.

6. भारतीय दर्शन, बल्देव उपाध्याय, पृ. सं. 45, प्रकाशक दृ चौखंबा ओरियंटलिया, वाराणसी, 1986.

7. भारतीय दर्शन, बल्देव उपाध्याय, पृ. सं. 456, प्रकाशक दृ चौखंबा ओरियंटलिया, वाराणसी, 1986.